Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 12, No. – 4, February - 2025, Conference Special Issue 2nd
2025

पारिवारिक संगठन में कामकाजी महिलाओं का योगदान (भूमिका)

Dr. Sunita
Assistant Professor, Department of Psychology,
Gopinath Singh Mahila Mahavidyalaya, Garhwa, Jharkhand

मनोवैज्ञानिकों का यह मानना है कि कामकाजी महिलाएं अपने पारिवारिक संगठन को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुई है। सामाजिक परिवर्तन के फलस्वरूप मूल्य बदलते हैं, परिभाषाएँ बदलती हैं, व्यक्तियों के प्रवृत्तियां बदली है। इस परिवर्तन के परिपेक्ष में कामकाजी महिलाएं यह सिद्ध कर दी हैं कि वे अपने आर्थिक सामाजिक एवं शैक्षणिक भावनात्मक विचारों के प्रचार एवं प्रसार के माध्यम से पारिवारिक विघटन के समस्या को कम करते हुए परिवार को विकसित किया है।

आज कामकाजी महिलाएं शिक्षा के फल स्वरुप अपनी कार्यों का निर्वहन करते हुए राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं। जिससे उनके सामाजिक स्थिति पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इसमें वर्तमान शिक्षा का प्रभाव, सामाजिक विधान में परिवर्तन, नगरीकरण तथा औद्योगिक विकास ने हमारे समाज में कामकाजी औरतों के स्थान में प्रर्याप्त रूप से परिवर्तन किया है। अगर समाज में महिलाओं को शिक्षा का समुचित लाभ देते हुए उन्हें रोजगार देकर आत्मनिर्भर बनाया जाए तो परिवार एवं समाज का विकास संभव है। ऐसे हम देखते हैं कि जहां परिवार में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया है वहां विषमता तथा कुरीतियां एक समस्या के रूप में उभर आती है, जो पारिवारिक विकास में बाधा बन जाती है। समाज के अंदर अपने पारिवारिक विकास जैसे बच्चों का शिक्षा एवं पारिवारिक सौहार्द को विकसित करने में पूरा योगदान देती है क्योंकि उनके सामने अपेक्षाकृत आर्थिक मजबूरियाँ कम होती है। अपने पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम रहती है। मनोवैज्ञानिकों की अवधारणा है कि कामकाजी महिलाएं परिवार में मान्यता की इच्छा को पूरा करने में सदैव मददगार साबित हुई है। शिक्षित महिलाएं परिवार के विकास के लिए परिवार की आय में वृद्धि करने के लिए योगदान कर रही हैं। विवाह केवल दो आत्माओं का आध्यात्मिक बंधन नहीं उसे जीवन के यथार्थ को वहन करने के लिए वस्त्र, भोजन, आवास, भौतिक सुविधा सभी की आवश्यकता है। बच्चों की शिक्षा–दीक्षा पर होने वाले व्यय से परिवार की आय में कमी आ रही। पति की सीमित आय आज के सामाजिक परिवेश में जीवन की सुविधा जुटाने में असमर्थ है। शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दबाव के कारण नारी को कामकाजी होना पड़ रहा है। आज पुरानी पीढ़ी के लोग भी यह इच्छा रखते हैं कि उनकी पुत्रवधू भी परिवार की आय में वृद्धि करें तथा वह सभ्य संस्कारित और शिक्षित हो। शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दबाव के कारण महिलाएं रोजगार की तरफ बढ़ी है। आज उनकी संख्या इतनी हो गई है कि सेवारत महिलाओं का स्वयं एक वर्ग बन गया है।

आज नारी अपने करियर के प्रति संवेदनशील है इससे जहां वह अपने पैरों पर खड़ी हुई है वहीं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसे रचनात्मक कार्यो के लिए फिर प्रेरित किया है। आज नारी घर में जितना कार्य करती है उसका कोई मोल नहीं समझता, पुरुष उसे महिला की ड्यूटी मानकर निश्चित हो जाते हैं यह स्थिति कामकाजी महिलाओं के साथ समान रूप से देखने को मिलती है उन्हें छ से दस घंटे तक बाहर रहना पड़ता है इस अवधि में उनके घर की व्यवस्था, बच्चों का पालन पोषण, शिक्षा–दीक्षा आदि गृहणी के हिस्से में ही आती है। फिर भी महिलाएं इसे बखूबी निभा रही कहने का तात्पर्य है कि महिलाओं की सामाजिक व पारिवारिक स्थिति का निर्धारण आज भी परिवार व परंपराओं के द्वारा होता है परंतु आज महिलाएं, पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चल रहीं हैं तो उनके जीवन में परिवर्तन आना स्वाभाविक है।

कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिलाओं के संदर्भ में किया जाता है अर्थात वे महिलाएं जो घरों से बाहर नियमित रूप से आर्थिक व व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त हैं आज के भौतिकवादी परिवेश में पत्नी का कामकाजी होना एक अनिवार्यता सी बन गई है घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पति और पत्नी दोनों का ही कार्य करना आवश्यक हो गया है कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिकाओं को निभाना पड़ता है। एक ओर पत्नी, मां, ग्रहणी की भूमिका को दूसरी ओर नौकरी का

कार्यकाल इन दोनों भूमिकाओं के तनाव के कारण महिलाओं के वैवाहिक जीवन में संघर्ष का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ा रही है। आज की महिलाएं अपने सभी कर्तव्यों को अच्छे से निभा रही हैं। महिलाएं बाह्य कार्यक्षेत्र में कार्य कर रही हैं जिससे आय का अर्जन भी करती है और घर परिवार का आर्थिक सहारा भी बन रही है। लेकिन इस बदलते युग के साथ पुरुष अभी भी परंपरावादी मानसिकता बनाए रखे हुए हैं इस पुरुषवादी मानसिकता में परिवर्तन बहुत धीमी गति से हो रहा है। जिस कारण कामकाजी महिलाओं को घरेलू स्तर पर अपनी जिम्मेवारियों को निभाने के लिए कई प्रकार से संघर्षों का सामना करना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं को न केवल मानसिक तनाव बल्कि शारीरिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है, जो समाज के प्रगति के लिए उचित नहीं है। महिलाएं घर परिवार और बाहय कार्यक्षेत्र में विविध भूमिकाओं में देखी जा सकती है लेकिन इतनी उपलब्धियों के बाद भी समाज में महिलाओं से रखी जाने वाली पूर्व स्थापित भूमिका अपेक्षाओं में अभी भी परिवर्तन नहीं आ रहा है। अतः कामकाजी महिलाएँ दंद्व की स्थिति का सामना करती है कि वह किस स्तर पर घरेलू और कार्य स्थल से जुड़ी भूमिकाओं को सही ढंग से निष्पादित करें वे भूमिका तनाव एवं भूमिका संघर्ष की स्थिति का सामना करने को मजबूर होती है। कामकाजी महिलाओं के समक्ष बहुआयामी प्रस्थिति एवं उनसे जुड़ी भूमिका अपेक्षाओं को बढ़ जाने से असंगतता व परस्पर विरोध करने के कारण भूमिका संघर्ष की स्थितियां उत्पन्न हो जाती है जो कामकाजी महिलाओं में अवसाद, तनाव सामंजस्यहीनता, मानसिक अंतर्दंद्व की स्थिति की ओर धकेलती है।

कामकाजी महिला से पारिवारिक सदस्य घरेलू स्तर पर परंपरागत भूमिकाओं की अपेक्षा करते हैं जो भूमिका संघर्ष का प्रमुख कारण है। यदि पारिवारिक सदस्यों द्वारा कामकाजी महिला के दायित्व के प्रति सहयोगात्मक अभिवृत्ति हो तो परिवार में भूमिका संघर्ष की स्थिति को कम किया जा सकता है। भूमिका संघर्ष की स्थिति का प्रमुख कारक भूमिका अपेक्षाएं हैं। कामकाजी महिलाओं को जहां एक ओर रोजगार के कारण मानसिक संतुष्टि, आत्माअभिव्यक्ति, व्यक्तित्व का विकास और आर्थिक स्वतंत्रता के अवसर प्राप्त होते हैं वहीं दूसरी ओर वह घरेलू कार्यों में तनाव तथा व्यवसाय में तनाव, दोहरा कार्यभार कारण वह दोहरे स्तर पर की जाने वाली भूमिका अपेक्षाओं के प्रति परिवार के सदस्यों की नकारात्मक अभिवृत्ति के रूप में चुकाती है।

भारतीय संस्कृति में घरेलू स्तर पर किए जाने वाले कार्यों का दायित्व महिलाओं का ही माना जाता है। कामकाजी महिलाओं के समक्ष इन कार्यों के नियोजन को लेकर एक चुनौती पूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती है क्योंकि उसे दोहरे स्तर के दायित्वों को निभाना होता है। उत्तरदाताओं का मत है कि अचानक से अवांछित स्थिति के उत्पन्न होने, जैसे किसी पारिवारिक सदस्य के बीमार होने, मेहमान के आने या अन्य कई कर्म से जब भी कार्य स्थल पर होती हैं तब वह घरेलू कार्यों के नियोजन को लेकर तनाव का सामना करती हैं, क्योंकि घरेलू स्तर पर कार्य की नियोजन को लेकर अपेक्षा महिला से की जाती है। ऐसी स्थिति में वह भूमिका संघर्ष का सामना करती है।

दोहरी जिम्मेदारियां के कारण कामकाजी महिलाओं को बाह्य र्कायक्षेत्र के अनुसार समय प्रबंधन भी आवश्यक होता है। 18 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि दोहरे दायित्वों के कारण व्यक्तिगत स्तर पर अपनी अभिरुचि के कार्यों को करने से मानसिक संतुष्टि के साथ ही तनाव से मुक्ति भी मिलती है।

वर्तमान उपभोग वादी युग में जहां एक और निर्वहन के लिए दोहरी आय का अर्जन आवश्यक है, जिसमें महिलाएं पूर्ण रूप में सहयोग भी कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर घरेलू स्तर पर परंपरागत भूमिकाओं को निभाने की अपेक्षा भी महिलाओं से अधिक की जाती है। आवश्यक है कि परंपरागत भूमिका अपेक्षाओं में परिवर्तन आए और समाज के विचारों का दायरा बदले, पारिवारिक स्तर पर किए जाने वाले कार्यों में लैंगिकता के आधार पर किए जाने वाला भेद समाप्त हो, जिसमें घरेलू कार्य मात्र महिला तक ही सीमित ना हो वर्णन वह सभी की सामूहिक जिम्मेदारी हो व पारिवारिक सदस्यों के सहयोग से कामकाजी महिला घरेलू स्तर और कार्य स्थल पर तनाव मुक्त होकर कार्य कर सकती है, जिससे उनके कार्य क्षमता में बढ़ोतरी होगी तथा वे पारिवारिक संगठन में अपना योगदान अच्छे से दे पाएगी।

कामकाजी महिलाएं दोहरी भूमिका का निर्वहन करते हुए परिवार की आर्थिक सहायता करती है। इस दोहरी जिम्मेदारी निभाने में उसे परिवार का सहयोग नहीं मिलता है तो वह अकेली जूझती रहती है, क्योंकि संयुक्त परिवार का निरंतर विघटन हो रहा है। महिला चाहे घरेलू हो या कामकाजी वह सदैव परिवार के

प्रगति का पर्याय रही है। क्योंकि समय नियोजन और प्रबंधन का दायित्व वह बखूबी निभाना जानती है। परिवार एवं गृह व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालन में कामकाजी महिलाओं की भूमिका अहम होती है। प्रबंधन के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका आज भी सराहनीय है और यह गृह व्यवस्था के सफल संचालन में एक प्रमुख कारक है, सुव्यवस्थित घर उसी को समझा जाएगा जहां परिवार के सभी व्यक्तियों को पारिवारिक कार्यों की पूर्ति से संतुष्टि और आनंद प्राप्त हो। ऐसे ही घर में हम सांसारिक दुख, चिंता तथा व्याकुलता से अपने को मुक्त पाते हैं, सुख शांति का अनुभव करते हैं क्योंकि इस तरह के परिवार में अपनतत्व की भावना प्रधान होती है। किसी भी समाज की तस्वीर बदलने में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि "मुझे योग्य माता दे दो मैं तुमको योग्य राष्ट्र दूंगा।" आज हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। महिला सशक्तिकरण के दौर में महिलाओं ने घर की देहली से बाहर कदम बढ़ाकर स्वयं कामकाजी महिला होने का गौरव हासिल किया है तथा स्वयं की और परिवार की स्थिति को परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया है।

काम और जीवन, व्यक्तियों के जीवन के दो सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं। व्यक्ति कार्य और जीवन को संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करते हैं जिसमें वे सफल और असफल होते हैं। कामकाजी महिलाएं जीवन के इन दो महत्वपूर्ण क्षेत्र के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करती हैं। यह देखा गया है कि 21वीं सदी में महिलाएं सामान्य तौर पर यह सोचती हैं कि उनके पास खुशहाल परिवार और सफल करियर हो, कामकाजी महिलाएं एक सशक्त महिला की श्रेणी में आती हैं। महानगरीय संस्कृति में परिवार में सांस्कृतिक मूल्यों के सृजन के संदर्भ में उनकी भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वहां पारिवारिक वातावरण के रूप में संयुक्त परिवार के अन्य सदस्य या आस पड़ोस का योगदान नगण्य में होता है। यदि विचार किया जाए तो परिवार के संचालन में वे नारी की भूमिका में होती है, कहा जाता है की नारी परिवार की धड़कन होती है हार्टबीट अगर ठीक ढंग से काम करती है तो सब काम होता है अगर हार्टबीट सही से काम नहीं करती तो बहुत सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। हमारे शरीर में जिस प्रकार नाड़ी का काम होता है उसी प्रकार परिवार और समाज में नारी का।

परिवार में महिलाओं की भागीदारी कहीं उत्साहवर्धक है लेकिन कहीं–कहीं महिलाओं को घर में परिवार के कार्य के साथ–साथ बाहरी कामकाजों में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। क्या कारण है कि महिलाएं परिवार के कार्य के साथ बाहरी कार्यों में भी वंचित हो रही है। इसका मुख्य कारक हमारे परंपरागत मानसिकता से ग्रस्त समाज में पुरुषों को घरेलू कार्यों से वंचित रखा जाता है, उनके लिए बाहरी कार्य क्षेत्र ही निर्धारित किए जाते हैं। समाज में पुरुषों का समाजीकरण इस प्रकार से किया जाता है कि उनकी स्वयं की मानसिकता सिर्फ बाहरी कार्य क्षेत्र के कार्यों को करने तक ही सीमित रहती है।

इस युग में जब हर चीज बदल रही है तो भला परिवार इससे अछूते कैसे रह सकते हैं संयुक्त परिवार की अवधारणा दम तोड़ती जा रही है और उसका स्थान एकल परिवार लेते जा रहे हैं। लेकिन इस परिवर्तन का एक सकारात्मक पक्ष भी है। कामकाजी महिलाओं की दिक्कतों को समझ कर परिवार की ओर से अब पूरा सहयोग दिया जाता है, उनकी घरेलू जिम्मेदारियां को बांटा जा रहा है, इस कारण महिलाओं की समाज में स्वतंत्रता और गतिशीलता को मान्यता मिल रही है और उन पर अनावश्यक सामाजिक बंधनों की पकड़ ढीली हो रही है। जिस प्रकार धुरी के कमजोर होने पर पहियों की गति शीलता में कमी तथा धुरी न होने पर पहियों का कोई अस्तित्व नहीं होता है ठीक उसी प्रकार नारी के कमजोर होने पर परिवार कमजोर तथा नारी के न होने पर परिवार या समाज का कोई अस्तित्व नहीं है। परिवार संस्था संगठित होने के स्थान पर तार–तार हो जाता है और बिखर जाता है। कामकाजी महिलाओं का परिवार के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है, संवेदन सूत्र परिवार को आपस में जोड़े रहते हैं महिलाओं को शिक्षित ना होने के कारण परिवार और समाज नष्ट होने लगता हैं।

पारिवारिक स्तर पर महिलाओं का योगदान भोजन, ईंधन, जल प्राप्ति, घरेलू कार्यों और कृषि से आय प्राप्त में होता है। कामकाजी महिलाएं प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही हैं। आय का अर्जन कर स्वालंबी भी बन रही है। पारिवारिक स्तर पर अपना आर्थिक सहयोग भी प्रदान करती हैं। आर्थिक स्वतंत्रता आने से सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ रहा है शहरों में कामकाजी महिलाओं की स्थिति व संख्या दोनों में लगातार वृद्धि हो रही है।

सभी शिक्षित महिलाएं किसी न किसी रोजगार में लग रही हैं, जिसके कारण उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आया है। वे अपने अधिकारों और सम्मान के प्रति जागरूक हुई हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति में सहयोग देने का कारण पत्नी ने सेविका के स्थान से सहयोगी व मित्र की स्थिति प्राप्त कर ली है इस वजह से पारिवारिक संगठन में मजबूती आ गई है। महिलाओं का कामकाजी होना भी क्रांति की एक बुनियाद है। स्त्री पुरुष मिलकर यदि आर्थिक उपार्जन कर लेता है तो इससे परिवार ही नहीं देश के विकास की संभावना भी बढ़ जाती है, पारिवारिक भूमिका के अलावा कई भूमिका निभानी पड़ती है। वह एक पत्नी, मां, बहू और दफ्तर में एक सहयोगी की भूमिका निभाती है और इन सब भूमिकाओं के अतिरिक्त उसे स्वयं का भी ध्यान रखना होता है। कामकाजी महिलाएं अपने परिवार को संगठित करने के लिए लक्ष्य की एकता जैसे बालकों का अनुशासन, शिक्षा, पारिवारिक बजट एवं इस प्रकार की अन्य कार्यों जैसे पारिवारिक सदस्यों के साथ सुमधुर व्यवहार बनाए रखने में सक्षम पाई गई है। एक कामकाजी महिला घर के कार्यों में सहायता की मांग करती है तो उन्हें एक अच्छी पत्नी एवं बहू ना होने की बातों से आरोपित की जाती है तथा वैवाहिक असमायोजन का सामना करना पड़ता है। अतः कामकाजी महिलाओं को अपने अर्जित धन को अपने इच्छा अनुसार व्यय करने का अधिकार होना चाहिए। इस तरह कामकाजी महिलाएं पारिवारिक संगठन के विकास में समाज के अंदर अमूल्य परिवर्तन लाने की दिशा में आदर्श भूमिका निभा रही है।

सन्दर्भ सूची :–

1. गुप्ता सेन पद्मिनी – भारत में कामकाजी महिला
2. कुमार शांति (2017) कामकाजी महिलाएँ समस्या एवं समाधान, जीएसटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. Mathur, Deepa (1992) - women Family s Work-Rawat publication Jaipur
4. Bhandari Mala (2004) - Quality Life of Urban working women- Abhijeet Publication
5. परमार दुर्गा (1982) श्रमजीवी महिलाएं, और समकालीन पारिवारिक संगठन, साहित्य भवन आगरा (पृष्ठ संख्या, 10–17)।
6. वी. एन. सिंह आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
7. शर्मा, नीरजा : महिला सशक्तीकरण, आस्था प्रकाशन 2013।